चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी0 ए0
हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
(वर्ष 2014–15 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

1 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

2 हिन्दी नाटक और रंगमंच

द्वितीय वर्ष

1 आधुनिक हिन्दी काव्य

2 हिन्दी कथा साहित्य

तृतीय वर्ष नोट :– बी0ए0 तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम वर्ष 2013–2014 से प्रभावी होगा।

1 अद्यतन हिन्दी एवं कौरवी लोक काव्य

2 हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधाएं

बी0 ए0
प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम
(वर्ष 2014–15 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

1 भारत सरकार की राजभाषा नीति

2 हिन्दी का प्रायोगिक व्याकरण और वार्तालाप

3 प्रायोगिक कार्य

द्वितीय वर्ष

1 हिन्दी में कार्यालयी और वाणिज्यिक पत्राचार

2 टिप्पणी एवं आलेखन

3 प्रायोगिक कार्य

तृतीय वर्ष नोट :– बी0ए0 तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम वर्ष 2013–2014 से प्रभावी होगा।

1 अनुवाद, दुभाषिया – प्रविधि, पारिभाषिक शब्दावली

2 संचार माध्यम

3 प्रायोगिक कार्य

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न पत्र
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

50 अंक

निर्धारित कवि– कबीर (30 साखी तथा 05 पद), जायसी (पद्मावत का एक खण्ड), सूरदास (20 पद), तुलसीदास (20 छन्द), बिहारी (30 दोहे), घनानन्द (20 छन्द), भूषण (20 छन्द)।

द्रुत पाठ – सरहपा, अब्दुर्रहमान, चन्दवरदाई, अमीर खुसरो, मीराबाई।

कबीरदास : साखी

गुरूदेव कौ अंग : सतगुरू की महिमा अनंत, गूंगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि, जाका गुरू भी अंधाला, नां गुर मिल्या न सिष भया, माया दीपक नर पतंग, सतगुरू हम सूं रीझ कर।

सुमिरण कौ अंग : कबीर कहता जात हूं, भगति भजन हरि नांव है, कबीर सूता क्या करै काहे न देखै जागि।

बिरह कौ अंग : चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिनन की जोवती, यहु तन जारौं मसि करूं, हंसि हंसि कंत न पाइए, नैनां अंतर आव तूं॰ कबीर देखत दिन गया, कै बिरहनि कूं मींच दे, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बसै, अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि।

परचा कौ अंग : पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंवल प्रकासिया, पिंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी ही तैं हिम भया, जब मैं था तब हरि नहीं, मानसरोवर सुभर जल, कबीर कंवल प्रकासिया।

रस कौ अंग : कबीर हरिरस यौं पिया, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की।

पद : संतो भाई आई ज्ञान की आंधी, जतन बिनु मिरगन खेत उजारे, रहना नहीं देश बिराना है, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, दुलहिनि गावहु मंगल चार।

जायसी

पद्मावत का मानसरोदक खण्ड (सम्पूर्ण)

सूरदास

विनय : आजु हौं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आवै, रै मन मूरख जनम गंवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जा दिन मन पंछी उडि जैहैं, अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ, प्रभु कौ देखौ एक सुभाई।

वात्सल्य : सोभित कर नवनीत लिये, खेलत मै को काको गुसैया, देखो भाई दधिसुत में दधि जात

श्रृंगार : बूझत स्याम कौन तू गोरी, निसिदिन बरसत नैन हमारे, अंखियां हरि दरसन की भूखी, मधुवन तुम कत रहत हरे, निरगुन कौन देस को बासी, ऊधौ आँखियां अति अनुरागी, आयो घोष बड़ो व्यापारी, मोहन मांग्यो अपनो रूप, ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही, अति मलीन वृषभान कुमारी, लरिकाइ को प्रेम आदि कैसे करके छूटत।

तुलसीदास

विनयपत्रिका :

ऐसी मूढता या मन की, ऐसो को उदार जग माही,
केसव कहि न जाइ का कहिये, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौं नसानी अब न नसइहौं, माधव मोह–फाँस क्यों टूटै।

कवितावली :

अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुंद कली, कीर के कागर ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर तें निकसी रघुबीर बधू, सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी बिसाल बिकराल।

दोहावली :

एक भरोसो एक बल, जो घन बरसै समय चिर, चढत न चातक चित कबहुं, बध्यों बधित पर्‌यो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद्।

बिहारी :

मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुंह तरहरि, या अनुरागी चित्त की, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, चिरजीवौं जोरी जुरै, अजौ तर्‌यौना ही रह्‌यौ, स्वारथ सुकृतु न श्रम वृथा, नर की अरु नल नीर की, बढ़त बढ़त सम्पत्ति सलिल, बसै बुराई जासु तन।

छकि रसाल सौरभ सने, तिय तिरसौंहे मन किये, ज्यों ज्यों बढत विभावरी, जुवति जोन्ह में मिलि, जोग जुगति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख, खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये, चमचमात चंचल नयन, अरुन बरन तरुनि चरन, दृग उरझत टूटत कुटुम, पिय के ध्यान गहि गही, कहत सबै बैंदी दिये, मंजुन करि खंजन नयनि, औरे ओप कनीनिकनि, कर मुंदरी की आरसी, मैं मिसहा सोयो समुझि, बतरस लालच लाल की, हेरि हिंडोरे गगन तें।

घनानंद :

अति सूधो सनेह को मारग है, भोर तें साँझ लौं कानन ओर, झलकै अति सुंदर आनन गौर, हीन भये जल मीन अधीन, घन आनंद जीवन रूप सुजान, इस बांट परी सुधि रावरे भूलनि, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, घनआनंद जीवन मूल सुजान की, आसा–गुन बांधि कै भरोसो सिल धरि छाती, कंत रमै उर अंतर मैं, मरिबो बिसराम गनै वह तो, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर, एरे बीर पौन तेरा सबै ओर गौन, बैरी वियोग की हूकन जारत, पर काजहि देह को धारि फिरौ, एकै आस एकै विसवास प्रान गहे बास, रावरे रूपकी रीति अनूप, चोप चाह चावनि चकोर भयौ चाहत ही।

भूषण :–

शिवा बावनी 25 पद

साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि, बाने फहराने घहराने घंटा गजन के, बद्दल न होंहिं दल दच्छिन घमंड माहिं, बाजि गजराज सिवराज सैन साजत ही, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग, अंदर ते निकसी न मंदर को देख्यो द्वार, सोंघे को अधार किसमिस जिनको अहार, साहि सिरताज और सिपाहिन में पातसाह, किबले की ठौर बाप बादसाह साहजहाँ, हाथ तसबीह लिए प्राप्त उठै बन्दगी को, कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाढ़े, सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग, राना नो चमेली और बेला सब राजा भये, कूरम कमलकमधुज है कदम फूल,

देवल गिरावते फिरावते निसान अली, साँच को न मानै देवी देवता न जानै अरु, कुभकन्न असुर औतारी अवरंगजेब, छूटत कमान और तीर गोली बानन के, उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ट छूटे, जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि।

प्रथम प्रश्न– (क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरी प्रश्न।
(प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10 X 1 = 10)
(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरी प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5 X 2 = 10)
इकाई–1. कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)
इकाई–2. बिहारी, भूषण, घनानंद के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)
इकाई–3. कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)
इकाई–4. बिहारी, भूषण, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

1– कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा
2– कबीर की विचारधारा – डॉ0 त्रिगुणायत–साहित्य निकेतन कानपुर
3– कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व – चंद्रमोहन सिंह, ज्ञान लोक इलाहाबाद
4– कबीर साहित्य की परख – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– भारती भण्डार, इलाहाबाद
5– कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली
6– कबीर – विजयेन्द्र स्नातक– राधा कृष्ण, दिल्ली
7– कबीर की भाषा – माताबदल जायसवाल–विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
8– सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
9– सूरदास और उनका साहित्य – हरवंश लाल शर्मा– भारत प्रकाश मंदिर अलीगढ़
10– सूरदास और उनका काव्य – गोवर्द्धन लाल शुक्ल– ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
11– सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा– नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
12– सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम– एस चंद एण्ड संस दिल्ली
13– सूर सौरभ – मुंशी राम शर्मा– ग्रन्थम, कानपुर
14– महाकवि सूरदास – जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा
15– त्रिवेणी – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा काशी
16– गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
17– तुलसी मानस रत्नाकर – भाग्यवती सिंह– सरस्वती पुस्तक सदन माता कटरा आगरा
18– तुलसीदास और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी– राजपाल एण्ड संस दिल्ली
19– तुलसी दर्शन – बलदेव प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
20– तुलसी रसायन – भगीरथ मिश्र– साहित्य भवन इलाहाबाद
21– तुलसी – उदयभानु सिंह– राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
22– जायसी का पदमावत : काव्य तथा दर्शन– गोविन्द त्रिगुणायत, साहित्य निकेतन, कानपुर
23– जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
24– जायसी का काव्य– सरोजनी पाण्डेय– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली
25– हमारे कवि – राजेन्द्र सिंह
26– बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
27– बिहारी और उनका साहित्य – हरवंशलाल शर्मा

28– कवित्रयी– (बिहारी, देव, घनानंद) – गिरीश चन्द्र तिवारी पुस्तक प्रचार, दिल्ली
29– बिहारी और घनानंद – परमलाल गुप्त
30– बिहारी का काव्य : आनन्द मंगल –

काव्य शास्त्र–
01– अलंकार पारिजात : नरोत्तम स्वामी– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
02– नूतन काव्य प्रकाश– डॉ0 उपेन्द्र त्रिपाठी– साहित्य रत्नालय, कानपुर
03– काव्य कौमुदी– डॉ0 बालकृष्ण गुप्त, साहित्य निकेतन कानपुर
04– अलंकार, रस, छन्द, परिचय– भारत भूषण त्यागी, लायल बुक डिपो, ग्वालियर
05– काव्य लोक गोपीनाथ शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
06– काव्य के रूप– गुलाब राय– आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी नाटक और रंगमंच

50 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम – (क) नाटक–ध्रुवस्वामिनी–जयशकंर प्रसाद, आधे–अधूरे – मोहन राकेश

(ख) एकांकी – औरंगजेब की आखिरी रात (डॉ0 राम कुमार वर्मा) , स्ट्राइक (भुवनेश्वर) भोर का तारा (जगदीश चन्द्र माथुर), नये मेहमान (उदयशकंर भट्ट), सूखी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

द्रुत पाठ – (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, धर्मवीर भारती।
(ख) हिन्दी रंगमंच का सामान्य परिचय

प्रथम प्रश्न

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)	(10 X 1 = 10)
(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से)	(5 X 2 = 10)
इकाई–1. नाटकों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 X 4 = 8)
इकाई–2. एकांकियों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 X 4 = 8)
इकाई–3. ध्रुवस्वामिनी एवं आधे–अधूरे से निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न।	(7 X 1 = 7)
इकाई–4. निर्धारित एकांकियों एवं एकांकीकारों से सम्बन्धित आलोचनात्मक प्रश्न	(7 X 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – हिन्दी नाटक और रंगमंच

01– हिन्दी नाटक : इतिहास के सोपान – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
02– हिन्दी नाटक : आजकल – जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
03– आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद
04– हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
05– आधुनिक हिन्दी नाट्यकारों के सिद्धान्त – निर्मला हेमन्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
06– प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
07– नाटककार जगदीश चंद्र माथुर – गोविन्द चातक, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
08– हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास – सिद्धनाथ कुमार
09– प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद – (सं0) सत्येन्द्र तनेजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10– हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन – भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
11– हिन्दी नाटक : मिथक एवं यथार्थ – रमेश गौतम
12– एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेन्द्र
13– हिन्दी नाटक – दशरथ ओझा
14– ध्रुवस्वामिनी – वस्तु एवं शिल्प – सुरेश नारायण
15– प्रसाद की नाट्यकला – सुजाता विष्ट

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न पत्र
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

50 अंक

निर्धारित कवि– कबीर (30 साखी तथा 05 पद), जायसी (पद्मावत का एक खण्ड), सूरदास (20 पद), तुलसीदास (20 छन्द), बिहारी (30 दोहे), घनानन्द (20 छन्द), भूषण (20 छन्द)।

द्रुत पाठ – सरहपा, , चन्दवरदाई,

कबीरदास : साखी

गुरूदेक कौ अंग : सतगुरू की महिमा अनंत, गूंगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि, जाका गुरू भी अंधाला, नां गुर मिल्या न सिष भया, माया दीपक नर पतंग, सतगुरू हम सूं रीझ कर।

सुमिरण कौ अंग : कबीर कहता जात हूं, भगति भजन हरि नांव है, कबीर सूता क्या करै काहे न देखै जागि।

बिरह कौ अंग : चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिनन की जोवती, यहु तन जारौं मसि करूं, हंसि हंसि कंत न पाइए, नैनां अंतर आव तूं, कबीर देखत दिन गया, कै बिरहनि कूं मींच दे, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बसै, अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि।

परचा कौ अंग : पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंवल प्रकासिया, पिंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी ही तैं हिम भया, जब मैं था तब हरि नहीं, मानसरोवर सुभर जल, कबीर कंवल प्रकासिया।

रस कौ अंग : कबीर हरिरस यौं पिया, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की।

पद : संतो भाई आई ज्ञान की आंधी, जतन बिनु मिरगन खेत उजारे, रहना नहीं देश बिराना है, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, दुलहिनि गावहु मंगल चार।

जायसी — पद्मावत का मानसरोदक खण्ड (सम्पूर्ण)

सूरदास

विनय : आजु हौं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आवै, रै मन मूरख जनम गंवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जा दिन मन पंछी उडि जैहैं, अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ, प्रभु कौ देखौ एक सुभाई।

वात्सल्य : सोभित कर नवनीत लिये, खेलत मै को काको गुसैया, देखो भाई दधिसुत में दधि जात

श्रृंगार : बूझत स्याम कौन तू गोरी, निसिदिन बरसत नैन हमारे, अंखियां हरि दरसन की भूखी, मधुवन तुम कत रहत हरे, निरगुन कौन देस को बासी, ऊधौ अंखियां अति अनुरागी, आयो घोष बड़ो व्यापारी, मोहन मांग्यो अपनो रूप, ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही, अति मलीन वृषभान कुमारी, लरिकाई को प्रेम आलि कैसे करके छूटत।

तुलसीदास

विनयपत्रिका : ऐसी मूढता या मन की, ऐसो को उदार जग माही,
केसव कहि न जाइ का कहिये, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौं नसानी अब न नसइहौं, माधव मोह–फाँस क्यों टूटै।

कवितावली : अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुंद कली, कीर के कागर ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर तें निकसी रघुबीर बधू, सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी बिसाल बिकराल।

दोहावली : एक भरोसो एक बल, जो घन बरसै समय चिर, चढत न चातक चित कबहुं, बध्यों बधित पर्‌यो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद्।

बिहारी : मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुंह तरहरि, या अनुरागी चित्त की, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, चिरजीवौं जोरी जुरै, अजौ तर्‌यौना ही रह्यौ, स्वारथ सुकृतु न श्रम वृथा, नर की अरु नल नीर की, बढ़त बढ़त सम्पत्ति सलिल, बसै बुराई जासु तन।
छकि रसाल सौरभ सने, तिय तिरसौंहे मन किये, ज्यों ज्यों बढत विभावरी, जुवति जोन्ह में मिलि, जोग जुगति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख, खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये, चमचमात चंचल नयन, अरुन बरन तरुनि चरन, दृग उरझत टूटत कुटुम, पिय के ध्यान गहि गही, कहत सबै बैंदी दिये, मंजुन करि खंजन नयनि, औरे ओप कनीनिकनि, कर मुंदरी की आरसी, मैं मिसहा सोयो समुझि, बतरस लालच लाल की, हेरि हिंडोरे गगन तें।

घनानंद : अति सूधो सनेह को मारग है, भोर तें साँझ लौं कानन ओर, झलकै अति सुंदर आनन गौर, हीन भये जल मीन अधीन, घन आनंद जीवन रूप सुजान, इस बांट परी सुधि रावरे भूलनि, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, घनआनंद जीवन मूल सुजान की, आसा–गुन बांधि कै भरोसो सिल धरि छाती, कंत रमै उर अंतर मैं, मरिबो बिसराम गनै वह तो, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर, एरे बीर पौन तेरा सबै ओर गौन, बैरी वियोग की हूकन जारत, पर काजहि देह को धारि फिरौ, एकै आस एकै विसवास प्रान गहे बास, रावरे रूपकी रीति अनूप, चोप चाह चावनि चकोर भयौ चाहत ही।

भूषण :– शिवा बावनी 25 पद
साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि, बाने फहराने घहराने घंटा गजन के, बद्दल न होहिं दल दच्छिन घमंड माहिं, बाजि गजराज सिवराज सैन साजत ही, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग, अंदर ते निकसी न मंदर को देख्यो द्वार, सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार, साहि सिरताज और सिपाहिन में पातसाह, किबले की ठौर बाप बादसाह साहजहाँ, हाथ तसबीह लिए प्राप्त उठै बन्दगी को, कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाढ़े, सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग, राना भो चमेली और बेला सब राजा भये, कूरम कमलकमधुज है कदम फूल,

देवल गिरावते फिरावते निसान अली, साँच को न मानै देवी देवता न जानै अरु, कुभकर्न असुर औतारी अवरंगजेब, छूटत कमान और तीर गोली बानन के, उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ठ छूटे, जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि।

प्रथम प्रश्न– (क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरी प्रश्न।
(प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10 X 1 = 10)

(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरी प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5 X 2 = 10)

इकाई–1. कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)

इकाई–2. बिहारी, भूषण, घनानंद के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)

इकाई–3. कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)

इकाई–4. बिहारी, भूषण, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

1– कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा
2– कबीर की विचारधारा – डॉ0 त्रिगुणायत–साहित्य निकेतन कानपुर
3– कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व – चंद्रमोहन सिंह, ज्ञान लोक इलाहाबाद
4– कबीर साहित्य की परख – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– भारती भण्डार, इलाहाबाद
5– कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली
6– कबीर – विजयेन्द्र स्नातक– राधा कृष्ण, दिल्ली
7– कबीर की भाषा – माताबदल जायसवाल–विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
8– सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
9– सूरदास और उनका साहित्य – हरबंश लाल शर्मा– भारत प्रकाश मंदिर अलीगढ़
10– सूरदास और उनका काव्य – गोवर्द्धन लाल शुक्ल– ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
11– सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा– नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
12– सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम– एस चंद एण्ड संस दिल्ली
13– सूर सौरभ – मुंशी राम शर्मा– ग्रन्थम, कानपुर
14– महाकवि सूरदास – जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा
15– त्रिवेणी – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा काशी
16– गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
17– तुलसी मानस रत्नाकर – भाग्यवती सिंह– सरस्वती पुस्तक सदन माता कटरा आगरा
18– तुलसीदास और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी– राजपाल एण्ड संस दिल्ली
19– तुलसी दर्शन – बलदेव प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
20– तुलसी रसायन – भगीरथ मिश्र– साहित्य भवन इलाहाबाद
21– तुलसी – उदयभानु सिंह– राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
22– जायसी का पद्मावत : काव्य तथा दर्शन– गोविन्द त्रिगुणायत, साहित्य निकेतन, कानपुर
23– जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
24– जायसी का काव्य– सरोजनी पाण्डेय– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली
25– हमारे कवि – राजेन्द्र सिंह
26– बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
27– बिहारी और उनका साहित्य – हरबंशलाल शर्मा

28– कवित्रयी– (बिहारी, देव, घनानंद) – गिरीश चन्द्र तिवारी पुस्तक प्रचार, दिल्ली
29– बिहारी और घनानंद – परमलाल गुप्त
30– बिहारी का काव्य : आनन्द मंगल –

काव्य शास्त्र–
01– अलंकार पारिजात : नरोत्तम स्वामी– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
02– नूतन काव्य प्रकाश– डॉ0 उपेन्द्र त्रिपाठी– साहित्य रत्नालय, कानपुर
03– काव्य कौमुदी– डॉ0 बालकृष्ण गुप्त, साहित्य निकेतन कानपुर
04– अलंकार, रस, छन्द, परिचय– भारत भूषण त्यागी, लायल बुक डिपो, ग्वालियर
05– काव्य लोक गोपीनाथ शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
06– काव्य के रूप– गुलाब राय– आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी नाटक और रंगमंच

50 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम – (क) नाटक–ध्रुवस्वामिनी–जयशकंर प्रसाद, आधे–अधूरे – मोहन राकेश

(ख) एकांकी – औरंगजेब की आखिरी रात (डॉ0 राम कुमार वर्मा), स्ट्राइक (भुवनेश्वर) भोर का तारा (जगदीश चन्द्र माथुर), नये मेहमान (उदयशकंर भट्ट), सूखी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

द्रुत पाठ – (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, धर्मवीर भारती।
(ख) हिन्दी रंगमंच का सामान्य परिचय

प्रथम प्रश्न

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)	(10 x 1 = 10)
(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से)	(5 x 2 = 10)
इकाई–1. नाटकों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 x 4 = 8)
इकाई–2. एकांकियों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 x 4 = 8)
इकाई–3. ध्रुवस्वामिनी एवं आधे–अधूरे से निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न।	(7 x 1 = 7)
इकाई–4. निर्धारित एकांकियों एवं एकांकीकारों से सम्बन्धित आलोचनात्मक प्रश्न	(7 x 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – हिन्दी नाटक और रंगमंच

01– हिन्दी नाटक : इतिहास के सोपान – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
02– हिन्दी नाटक : आजकल – जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
03– आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद
04– हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
05– आधुनिक हिन्दी नाट्यकारों के सिद्धान्त – निर्मला हेमन्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
06– प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
07– नाटककार जगदीश चंद्र माथुर – गोविन्द चातक, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
08– हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास – सिद्धनाथ कुमार
09– प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद – (सं0) सत्येन्द्र तनेजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10– हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन – भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
11– हिन्दी नाटक : मिथक एवं यथार्थ – रमेश गौतम
12– एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेन्द्र
13– हिन्दी नाटक – दशरथ ओझा
14– ध्रुवस्वामिनी – वस्तु एवं शिल्प – सुरेश नारायण
15– प्रसाद की नाट्यकला – सुजाता विष्ट

29/6/19